कुमार-बिमल के साहसिक कारनामे

अटलाण्टिक अभियान

हेमेन्द्र कुमार राय़

अनुवादक

जयदीप शेखर

PREVIEW

अटलाण्टिक अभियान

‘कुमार-बिमल’ शृंखला की बँगला साहसिक कहानी
‘नील सायरेर अचिनपुरे’ का हिन्दी अनुवाद

लेखक
हेमेन्द्र कुमार राय

अनुवादक
जयदीप शेखर

जगप्रभा

JAGPRABHA.IN

Cover Photo Credit
Image by ojosujono96 on Freepik

-: eBook :-

ATLANTIK ABHIYAN
(Atlantic Expedition)
Hindi translation of the Bengali adventure story 'Neel Sayarer Achinpure' from the 'Kumar-Bimal' series.
Original author: Hemendra Kumar Roy (1888-1963)
Hindi translation: Jaydeep Das
(Pen Name: Jaydeep Shekhar)
Copyright © 2023: Translator
Published by:
JagPrabha
Barharwa (SBG), JH- 816101
jagprabha.in | jagprabha.bhw@gmail.com
Price: ₹ 125.00
***

हेमेन्द्र कुमार राय

(1888 - 1963)

बँगला में किशोर-साहित्य के एक लोकप्रिय कथाकार। बाल-किशोरों के लिए सैकड़ों कहानियों एवं लघु उपन्यासों की रचना की- बड़ों के लिए भी बहुत कुछ लिखा। 1930 से 1960 के दशकों में उनकी कहानियों के बिना बाल-किशोर पत्रिकाएं अधूरी-सी लगती थीं। मुख्यरूप से उन्होंने दुस्साहसिक (Adventure), जासूसी (Detective) और परालौकिक (Supernatural), कहानियाँ लिखी हैं। कहानियों में रहस्य (Mystery), रोमांच (Thrill) और भय (Horror) का ऐसा पुट होता है कि दम साधकर कहानियों को पढ़ना पड़ता है। कुछ कहानियाँ खजाने की खोज (Treasure hunt) और वैज्ञानिक कपोल-कल्पना (Science-fiction) पर भी आधारित हैं। उनकी रची 'कुमार-बिमल' और 'जयन्त-माणिक' श्रृंखलाएं अपने समय में बहुत लोकप्रिय हुई थीं- पहली दुस्साहसिक कहानियों की तथा दूसरी जासूसी कहानियों की श्रृंखला है। उनकी रची परालौकिक कहानियों को पढ़ने का अलग ही रोमांच है।

***

अटलाण्टिक अभियान 6

तूफान 6

ब्लैक क्रैत स्नेक 13

गोमेज का प्रवेश 21

अनाहूत अतिथि 29

चाँदी का ‘सर्पमुख’ 35

सारे कौओं की एक ही पुकार 42

टापू पर लंगर 51

अष्ट नरमुण्ड 60

धरती का पहला मानव 66

खोया हुआ देश 73

लॉस्ट अटलाण्टिस का इतिहास 81

खण्डप्रलय 88

अटलाण्टिक अभियान

तूफान

टन्न!

बड़ी दीवार-घड़ी में सुबह के साढ़े सात बज गये। यही था बिमल और कुमार के चाय पीने का समय। चाय की ट्रे हाथों में लिये रामहरि ने कमरे में आकर देखा, वे दोनों बड़े मनोयोग के साथ एक अखबार पर झुके हुए थे।

यह अखबार और यह मनोयोग– दोनों रामहरि को पसन्द नहीं आये। कारण रामहरि को पता था– कोई एक जबर्दस्त खबर न रहने पर दोनों इस तरह ध्यान देकर अखबार नहीं पढ़ते थे और उन दोनों के लिए जबर्दस्त खबर का मतलब था– खतरों की खबर! क्या पता, अभी यही खबर पढ़कर वे बोल उठें, "उठो रामहरि! बाँधो बोरिया-बिस्तर! आज ही हम कोलकाता से रवाना हो रहे हैं!" कितनी बार ऐसा हो चुका था– इसका कोई हिसाब नहीं था।

अतः ये अखबार रामहरि को फूटी आँख नहीं सुहाते थे। उसके अनुसार, ये मानव के शत्रु और विपत्ति के अग्रदूत थे!

रामहरि ने जोर से ट्रे को टेबल पर रखा, लेकिन फिर भी दोनों ने अखबार से चेहरा नहीं उठाया!

रामहरि झल्लाकर बोला, "क्या, चाय-वाय पीनी है, या आज अखबार पढ़कर ही पेट भरना है?"

बिमल पलटकर बोला, "क्या बात है रामहरि, सुबह-सुबह तुम्हारी आवाज इतनी बेसुरी क्यों है?"

"पूछ रहा हूँ– अखबार पढ़ना है, या चाय पीनी है?"

कुमार हँसकर बोला, "अखबार पर तुम्हारा इतना गुस्सा क्यों है?"

"गुस्सा न होऊँ? ये मुए अखबार ही तो आप लोगों को दुनिया भर की ऊट-पटाँग खबरें देते हैं और आप लोग घर-द्वार छोड़कर निकल पड़ते हैं!"

बिमल ठहाका मारकर हँस पड़ा, बोला, “अरे नहीं, रामहरि ने तो हमें अच्छी तरह से पहचान लिया है कुमार!”

“बचपन से देख रहा हूँ आप लोगों को, पहचानूँगा नहीं? ये अखबार-टखबार पढ़ना छोड़ दीजिए!”

“बिलकुल रामहरि, हम लोग सचमुच कुछ दिनों के लिए अखबार पढ़ना छोड़ देंगे!”

रामहरि बहुत खुश होकर बोला, “आपके मुँह में घी-शक्कर! मुझे भी चैन मिलेगा कुछ दिनों के लिए!”

“चैन मिलेगा या नहीं– यह तो नहीं पता रामहरि, लेकिन हम लोग चाहकर भी अखबार नहीं पढ़ पायेंगे– इसमें कोई सन्देह नहीं है। दरअसल, हम लोग इस बार जिस देश में जा रहे हैं, वहाँ अखबार नहीं मिलते।”

रामहरि का चेहरा उतर गया। बोला, “इसका मतलब?”

“हम लोग बहुत जल्द समुद्र-यात्रा पर निकल रहे हैं न।”

“अरे बाप रे, समुद्दर मे? इस बार किस भाड़ में? पाताल तो नहीं?”

“हो सकता है। वैसे, पहले हम जायेंगे साहेब लोगों के देश में– यानि इंग्लैण्ड। वहाँ से एक पानी वाला जहाज रिजर्व करके जायेंगे अफ्रिका और अमेरिका के बीच अटलाण्टिक महासागर के किसी ऐसे द्वीप पर, जिसका कोई नाम कोई नहीं जानता।”

“साथ में कौन-कौन जा रहा है?”

“मैं, कुमार, बिनयबाबू, कमल, बाघा और तुम[1]– यानि हमारा पूरा दल। इस बार का मामला गम्भीर है, इसलिए दो दर्जन सिक्ख, गोरखा और पठान लड़ाके भी साथ लेने होंगे।”

रामहरि चेहरे को गम्भीर बनाते हुए बोला, “बहुत अच्छा, आप लोगों को जहाँ जाना हो– जाईए, लेकिन इस बार मैं आप लोगों के साथ नहीं हूँ।” कहकर दनदनाते हुए वह कमरे से निकल गया।

बिमल चाय की ट्रे उठाकर मुस्कुराते हुए बोला, “रामहरि का कहना है कि इस बार वह हमारे साथ नहीं जायेगा, लेकिन यात्रा के दिन देखा जायेगा कि वही

---

[1] इसके पहले के दो अभियानों में भी– ‘मंगल ग्रह के यात्री’ और ‘डायनासोर की दुनिया में’– बिनयबाबू और कमल शामिल रहे थे।

हम लोगों के आगे-आगे दनदनाते हुए चला जा रहा है! ...खैर, कुमार चाय पी लो। चाय पीते हुए लेख को एक बार फिर से शुरू से पढ़कर सुनाना तो। बार-बार सुनकर सारे घटनाक्रम को मन में छाप लेना होगा।"

कुमार ने अखबार हाथ में लेकर ऊँची आवाज में पढ़ना शुरू किया:

"अटलाण्टिक महासागर में एक विचित्र रहस्य की जानकारी प्राप्त हुई है। यह जानकारी 'एस.एस. बोहेमिया' नामक जलजहाज के यात्रियों के मार्फत प्राप्त हुई है।

"'एस.एस. बोहेमिया' यूरोप से अमेरिका की यात्रा पर था। अटलाण्टिक महासागर में यह जहाज एक भयानक तूफान में फँस गया। इस भीषण तूफान की खबर पिछले सप्ताह हमारे अखबार में प्रकाशित हुई थी, जिसके बारे में यह बताया गया था कि भूकम्प के साथ ऐसा जोरदार तूफान अटलाण्टिक महासागर में बीती एक शताब्दी में देखने में नहीं आया था। अटलांटिक महासागर में स्थित कई द्वीपों तथा इसके किनारे स्थित कई देशों में इस तूफान के चलते जान-माल की भारी क्षति हुई थी। कई छोटे द्वीपों का तो अस्तित्व ही समाप्त हो गया। बहुत सारे व्यवसायिक एवं यात्री जलजहाज आज तक किसी बन्दरगाह में नहीं लौटे हैं और शायद अब लौटेंगे भी नहीं।

"'बोहेमिया' भी इसी तूफान के चंगुल में पड़ गया था, लेकिन सौभाग्य से विगत अट्ठारह तारीख को यह जहाज क्षत-विक्षत अवस्था में अपने स्वदेश के बन्दरगाह में लौट आया है। इसके यात्रियों ने एक विस्मयकारी कहानी सुनायी है। एक यात्री के बयान के आधार पर वह कहानी यहाँ बतायी जा रही है।

"बीच महासागर में तूफान के चंगुल में पड़ने के बाद 'बोहेमिया' का इंजन बन्द हो गया, जिस कारण तूफान के थपेड़ों में असहाय भाव से बहता हुआ यह जहाज किस तरफ जा रहा था– यह कोई नहीं समझ पाया। जहाज की बिजली भी गुल हो गयी थी। रात के अन्धकार में उत्ताल तरंगों पर जहाज सूखे पत्ते के समान डूबते-उतराते हुए तैर रहा था।

"पाँच घण्टों के बाद जब तूफान शान्त हुआ, तब पाया गया कि बुरी तरह से क्षतिग्रस्त 'बोहेमिया' अब भी पानी पर तैर रहा था, लेकिन यह समुद्र के किस हिस्से में था– यह किसी को पता नहीं था। कप्तान के साथ अन्य यात्री भी डेक

पर आकर चारों तरफ निरीक्षण करने लगे। रात बीतने वाली थी, आकाश में चाँद नहीं था, चारों तरफ अन्धेरे की दीवारें खड़ी थी और समुद्र अब भी गरज रहा था।

“कुछ देर के बाद एक तरफ बहुत सारी टिमटिमाती हुई रोशनी की रेखा दिखायी पड़ी। लहरें जहाज को उसी तरफ लिये जा रही थीं। धीरे-धीरे टिमटिमाती रोशनी की वह रेखा और भी स्पष्ट हुई। तब कप्तान ने दूरबीन की मदद से देखकर अनुमान लगाया कि बहुत सारे लोग जलती हुई मशालें लेकर चल-फिर रहे थे। जाहिर था कि जहाज किसी द्वीप की ओर बढ़ रहा था और द्वीप के बासिन्दे– जिस किसी भी कारण से– जलती मशालें लेकर समुद्र के किनारे चल-फिर रहे थे। समुद्रवर्ती द्वीपों के बासिन्दे तूफान के बाद अक्सर ऐसा करते थे– तूफान में फँसे किसी जहाज या उसके यात्रियों की मदद के लिए।

“कुछ देर के बाद एकाएक ये रोशनियाँ गायब हो गयीं। फिर भी, एक द्वीप नजदीक में ही है– इसकी सम्भावना जानकर कप्तान और यात्रियों ने ईश्वर को बारम्बार धन्यवाद दिया।

“सुबह का उजाला फूटने तक समुद्र बिलकुल शान्त हो गया था और उस उजाले में जहाज पर सवार लोगों के सामने रंगमंच के दृश्यपट के समान एक द्वीप की तस्वीर उभर आयी!

“वह द्वीप बहुत विशाल नहीं था– उसका क्षेत्रफल चार-पाँच वर्गमील से ज्यादा नहीं रहा होगा, लेकिन कायदे से, वह द्वीप कहलाने लायक भी नहीं था– उसे एक पहाड़ ही कहा जा सकता था!

“द्वीप की जमीन बीच में ऊँची उठती हुई पहाड़ का शिखर बना रही थी। निचले हिस्से में ढलान कम थी, जिस पर अनायास ही चला-फिरा जा सकता था; लेकिन आकाश छूती शिखर की चढ़ाई बिलकुल खड़ी थी। सागरतल से शिखर की ऊँचाई डेढ़ हजार फुट से कम नहीं रही होगी।

“कप्तान ने दूरबीन से देखा, उस पर्वत-द्वीप पर कहीं कोई पेड़-पौधा नहीं था– यहाँ तक कि हरियाली का आभास तक नहीं था! और एक आश्चर्यजनक बात यह थी कि द्वीप पर यहाँ-वहाँ बड़ी-बड़ी प्रस्तर-प्रतिमाएं खड़ी थीं– कुछ प्रतिमाएं इतनी विशाल थीं कि उनकी ऊँचाई डेढ़ सौ से दो सौ फुट तक हो सकती थी! पहाड़ की चट्टानों को खोदकर इन विचित्र प्रतिमाओं को गढ़ा गया था! दूर से देखने पर ये प्राचीन मिस्र की प्रतिमाएं जान पड़ रही थीं!

“लेकिन बीती रात में जो लोग इस पर्वत-द्वीप पर जलती मशालें लेकर चलना-फिरना कर रहे थे, उनमें से कोई भी सुबह के उजाले में दिखायी नहीं पड़ा। द्वीप की पथरीली जमीन पर जिस तरह हरियाली का नामो-निशान नहीं था, उसी तरह किसी जीव या मनुष्य की बसावट का भी कोई चिह्न नहीं था। यहाँ तक कि चिड़ियाँ तक वहाँ नहीं उड़ रही थीं!

“कप्तान एक अनुभवी जहाजी थे, अटलाण्टिक महासागर की प्रत्येक लहर से वे भली-भांति परिचित थे, नौवहन में काम करते हुए उन्होंने अपने बाल सफेद किये थे, लेकिन इस द्वीप को उन्होंने कभी नहीं देखा था; इसके अस्तित्व का जिक्र तक उन्होंने किसी के मुँह से नहीं सुना था! .....या, इसका जिक्र सुनकर वे कहीं भूल तो नहीं गये थे? क्या ऐसी गलती उनसे हो सकती थी? द्वीप के बहुत नजदीक आने के बाद लंगर डलवाकर वे तेजी से अपने केबिन में गये। ‘चार्ट’ निकालकर बहुत गहराई से उन्होंने निरीक्षण किया– ऐसे पर्वत-द्वीप का कोई संकेत उन्हें नहीं मिला! फिर यह द्वीप यहाँ आया कहाँ से?

“बहुत दिमाग खपाकर भी उन्हें कोई उत्तर नहीं सूझा; वे फिर बाहर निकल आये और आठ नाविकों को उन्होंने बोट पर सवार होकर द्वीप का निरीक्षण कर आने को कहा।

“नाविक बोट लेकर रवाना हो गये। द्वीप के किनारे बोट बाँधकर वे द्वीप की जमीन पर उतरे– जहाज से यह स्पष्ट दिखायी पड़ा। इसके बाद पहाड़ की चढ़ाई करते हुए वे आँखों से ओझल हो गये।

“दो घण्टों के अन्दर नाविकों के लौट आने की बात थी, लेकिन तीन– चार– पाँच घण्टे बीत गये, फिर भी उनका अता-पता नहीं था! कप्तान चिन्तित एवं व्यग्र हुए। और भी दो घण्टे बीते! सुबह छह बजे नाविक गये थे और अभी दिन के एक बज रहे थे– कहाँ चले गये वे?

“इस बार कप्तान स्वयं दल-बल के साथ दूसरी बोट लेकर उतरे। इस बार सभी सशस्त्र थे! क्योंकि कप्तान को सन्देह हुआ था कि द्वीप पर जाकर नाविकगण किसी खतरे में पड़ गये थे! कल रात जिनके हाथों में मशालें थीं, वे कौन थे? कहीं समुद्री लुटेरे तो नहीं, जिन्होंने इस निर्जन द्वीप को अपना अड्डा बना रखा हो?